**RESEARCH RIVAL** **ISSN: 2456-1096**
**(A Multi-Disciplinary Peer-Reviewed and Refereed Bi-Annual Research Journal)** **Vol. 10, Issue 2**
**July-December 2024**

# शास्त्रीय संगीत का मूल्यांकन

**डॉ॰ भैरवी**
असिस्टेंट प्रोफेसर, राजकीय कन्या महाविद्यालय, चीका।
E-mail: bhairvi24@gmail.com

भारतीय संगीत की एक संवृद्ध, विकसित, अनूठी एवं मौलिक परम्परा रही है। हमारा संगीत कभी ऋषियों के तपोवनों में गूँजा तो कभी सम्राटों के महलों में। कभी वैदिक ऋचाओं में इसकी अनुभूति हुई तो कभी लोकोत्सवों में इसने अपनी छाप छोडी; कभी यह मंदिरों और पूजा–स्थानों में खिला तो कभी सामाजिक–सांस्कृतिक समारोहों में। इसके इतने अधिक आयाम है कि कहना कठिन हो जाता है कि किस संगीत को क्या नाम दें। भक्ति संगीत, लोक संगीत, मार्ग संगीत, देशी संगीत, निबद्ध–अनिबद्ध संगीत, गांधर्व और गान में निहित संगीत, जाति गायन, नाट्य संगीत, पार्श्व–संगीत, शास्त्रीय संगीत उप–शास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत–संगीत के इतने अधिक रूप विस्तार और इतने अधिक प्रकार हैं कि सबको एक धारा में समेटना मुश्किल हो जाता है। प्रस्तुत शोध–पत्र में हम इस बात पर अपना ध्यान केंद्रित करेंगे कि शास्त्रीय संगीत क्या है, इसके कौन–कौन से आयाम हैं और इसका क्षेत्र–विस्तार कैसा है।

## शास्त्रीय संगीत क्या है?

आम तौर पर रागदारी संगीत को ही शास्त्रीय संगीत की संज्ञा दे दी जाती है। ऐसा मान लिया जाता है कि राग आधारित संगीत ही शास्त्रीय संगीत है। रागाधारित कोई भी रचना शास्त्रीय संगीत की श्रेणी में रखी जाती है। इसके पीछे यह तर्क दिया जाता है कि राग आधारित संगीत का एक शास्त्र है। इसके कुछ नियम हैं जिनका पालन गायकों और वादकों को करना होता है। इसका एक निश्चित मार्ग है। राग–लक्षणों पर अवलंबित इसका सुनियोजित मार्ग है। इसलिये इस संगीत को मार्गी संगीत भी कहा जाता है।

लेकिन हम जानते हैं कि रागों का आविर्भाव मतंग के ‘वृहद्देशि’[1] के समय से पहले नहीं हो पाया था। इसलिये, यदि राग आधारित संगीत को शास्त्रीय संगीत के रूप में स्वीकार कर लिया जाये, और राग को शास्त्रीय संगीत की एक शर्त मान लिया जाये तो शास्त्रीय संगीत की परंपरा केवल हजार–पंद्रह सौ वर्ष की ही रह जायेगी। इसके अतिरिक्त नियम तो हर संगीत के होते हैं। फ़िल्म संगीत की रचना भी कुछ नियमों को ध्यान में रखकर की जाती है। सुगम संगीत के भी कुछ नियम होते हैं। भजन–गज़ल की रचना–प्रक्रिया का भी एक शास्त्र होता है। उसमें भी स्वर, ताल, (तथा कभी–कभी राग भी) होते हैं। इसलिये, यदि शास्त्रीय संगीत का पैमाना निश्चित नियम तथा शास्त्र है, तो सभी संगीत रचनायें शास्त्रीय संगीत की ही श्रेणी में आयेंगी, क्योंकि हर संगीत रचना का एक मार्ग होता है, हर संगीत रचना के कुछ नियम होते हैं, हर संगीत रचना का एक शास्त्र होता है। इस कारण से हम शास्त्रीय संगीत की उपर्युक्त परिभाषा को तर्कसंगत नहीं मान सकते।

शास्त्रीय संगीत का अंग्रेजी पर्याय क्लासिकल म्यूज़िक है। क्लासिकल शब्द उन परंपराओं अथवा शैलियों के लिये प्रयुक्त किया जाता है जो किसी वर्ग विशेष (क्लास) से संबंध रखते हों, अथवा जो सामान्य जनता के बीच अधिक लोकप्रिय न हो। जैसे लैटिन एक क्लासिकल भाषा है। पाश्चात्य विद्वान संस्कृत को भी अधिक लोकप्रिय न होने के कारण क्लासिकल भाषा ही मानते हैं।

इसी प्रकार जब अंग्रेज भारत आये तथा अनेक अंग्रेज विद्वानों ने भारतीय शास्त्रीय संगीत का अध्ययन आरंभ किया, तो उन्होंने पाया कि यह संगीत जनसाधारण के अधिक करीब नहीं था। यह संगीत राजदरबारों, छोटी–छोटी रियासतों तथा ज़मींदारों–सामंतों की

हवेलियों तक ही सीमित था। जनसाधारण तक इसकी पहुँच नहीं थी। सामान्य जनता में तो केवल इस संगीत की चर्चा मात्र होती थी। सामंतों, शासकों आदि के एक विशिष्ट वर्ग से संबंधित होने के कारण अंग्रेजों तथा अन्य पाश्चात्य विद्वानों ने राग आधारित इस संगीत को क्लासिकल म्यूज़िक का नाम दिया। इसी क्लासिकल म्यूज़िक का हिंदी रूपांतर हुआ – शास्त्रीय संगीत। इसके बरअक्स, जो संगीत जन सामान्य में अधिक प्रचार में था, उसे फ़ोक म्यूज़िक, कंट्री म्यूज़िक आदि नामों से संबोधित किया।

इस प्रकार अब यह मानने में कोई असुविधा नहीं रह जाती कि शास्त्रीय संगीत शब्द हमारे यहां का नहीं है। यह शब्द तो अंग्रेजों के क्लासिकल म्यूज़िक का पर्याय मात्र है। अध्ययन की सुविधा के लिए हम यह मान लेते हैं कि शास्त्रीय संगीत का दूसरा नाम रागदारी संगीत ही है। इस प्रकार, अब हम शास्त्रीय संगीत की जो भी चर्चा करेंगे वह रागदारी संगीत के संदर्भ में ही होगी।[2]

रागदारी संगीत को शास्त्रीय संगीत के बरक्स मान लेने के बाद अगला प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि क्या रागबद्ध सभी रचनायें शास्त्रीय संगीत में आयेंगी? अनेक गीत ऐसे मिल जायेंगे जो सुगम संगीत पर आधारित होंगे लेकिन किसी राग में बँधे होंगे। क्या ऐसे गीतों को शास्त्रीय संगीत की श्रेणी में रखा जा सकता है?

नीचे यूट्यूब से फ़िल्मी गीतों के कुछ उदाहरण दिया जा रहे हैं: –

**1.ज्योति कलश छलके[3]**

यह गीत स्वर–साम्राज्ञी लता जी के द्वारा गाया गया था। यह गीत राग भूपाली में निबद्ध किया गया है। फ़िल्म "भाभी की चूड़ियां" के लिए रिकॉर्ड किया गया था।

**2. झनक–झनक पायल बाजे[4]**

यह गीत उस्ताद अमीर खां के द्वारा फ़िल्म "झनक–झनक पायल बाजे" के लिए गाया गया था और यह अडाना नामक राग पर आधारित है।

**3. मनमोहना बड़े झूठे[5]**

यह गीत लता जी के द्वारा गाया गया था और जैजैवंती राग पर आधारित है।

ऐसे अनेक अन्य उदाहरण दिये जा सकते हैं। ऐसे गीतों को सुगम संगीत के अंतर्गत सम्मिलित किया जाये अथवा शास्त्रीय संगीत में इन्हें जोड़ दिया जाये–इस पर विद्वानों में एकमत होना आवश्यक है। इसके अतिरिक्त, आजकल शास्त्रीय संगीत के अनेक मूर्धन्य कलाकारों के द्वारा भजन इत्यादि भी गाये जा रहे हैं। उदाहरण के लिये, पं. जसराज के द्वारा गाया गया ''ओम् नमो भगवते वासुदेवाय'',[6] पं. भीमसेन जोशी के द्वारा गाया गया ''जो भजे हरि को सदा'',[7] विदुषी किशोरी अमोनकर के द्वारा गाये गये भजन,[8] पं. कुमार गंधर्व के द्वारा गाये गये भजन इत्यादि। ऐसे अनेक उदाहरण उपलब्ध हैं। क्या इन गीतों को सुगम संगीत के अंतर्गत माना जाये अथवा शास्त्रीय संगीत के अंतर्गत? जो भी हो, हमें शास्त्रीय संगीत के लिए कुछ मानदंड तो निर्धारित करने ही होंगे।

नीचे शास्त्रीय संगीत के कुछ मानदंड हम प्रस्तुत कर रहे हैं: –

1. शास्त्रीय संगीत राग पर आधारित होना चाहिए।
2. शास्त्रीय संगीत में राग लक्षणों का दिग्दर्शन होना चाहिए। न्यास, अपन्यास, अल्पत्व–बहुत्व इत्यादि का निदर्शन शास्त्रीय संगीत के लिए आवश्यक है।
3. शास्त्रीय संगीत में जिन गीत विधाओं का निरूपण हो, वे खयाल, ध्रुवपद, धमार, चतुरंग, त्रिवट, राग–माला और राग सागर जैसी शैलियों पर आधारित होनी चाहिये।
4. शास्त्रीय संगीत में राग विस्तार और स्वर विस्तार के नियमों का पालन होना चाहिये। ध्रुवपद–धमार में नोम–तोम, खयाल में आलाप–तानें इत्यादि दिग्दर्शित होनी चाहिये।

इन मानदंडों पर आधारित संगीत शास्त्रीय संगीत की श्रेणी में रखा जा सकता है। इनके अतिरिक्त अन्य प्रकार के संगीत को इसमें सम्मिलित नहीं किया जा सकता। इस प्रकार रागदारी संगीत, जो ऊपर बताये गये

शास्त्रीय संगीत के मानदंडों को पूरा करे, वास्तव में वही शास्त्रीय संगीत है।

**शास्त्रीय संगीत का क्षेत्रः**

शास्त्रीय संगीत के अंतर्गत राग पर आधारित बंदिशें ही निहित रहती हैं। केवल बंदिशों के प्रस्तुतीकरण तक शास्त्रीय संगीत सीमित नहीं रहता। वह तो राग–लक्षणों का परिष्कार भी करता है, उनसे क्रीड़ा भी करता है। वास्तव में राग नियमों से बँधे रहकर नवनवोन्मेष स्वरावलियों से सजाकर जब बंदिश को कंठ के द्वारा अथवा वाद्य के द्वारा प्रस्तुत किया जाता है, तब शास्त्रीय संगीत का सृजन होता है। नवनवोन्मेषकारिणी प्रतिभा के धनी अनुपम कलाकारों के द्वारा इन्हीं स्वरावलियों के द्वारा चमत्कारिक आनंद का सृजन शास्त्रीय संगीत के माध्यम से किया जाता है। शास्त्रीय संगीत का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। इसमें कंठ संगीत, वाद्य संगीत इत्यादि के वे सभी सृजनात्मक आयामों का आविर्भाव हो जाता है, जो राग पर आधारित होते हैं। लेकिन एक समस्या फ़िर भी रह जाती है। नृत्य को शास्त्रीय संगीत में किस प्रकार माना जाये?

**नृत्य का शास्त्रीय संगीत में समावेशः**

यह विचारणीय बिंदु है कि नृत्य को शास्त्रीय संगीत में सम्मिलित किया जाये अथवा नहीं। ऊपर बताये गये शास्त्रीय संगीत के मानदंडों के अंतर्गत तो नृत्य का शास्त्रीय संगीत से कोई संबंध नहीं है। लेकिन संगीत रत्नाकर में प्राप्त संगीत की परिभाषा में नृत्य का भी समावेश किया गया है।[१] इस प्रकार, यह समस्या तो रहती ही है कि नृत्य को केवल संगीत का अंग माना जाये अथवा शास्त्रीय संगीत का। हमारे मंतव्य के अनुसार, नृत्य का भी एक शास्त्र होता है। इसके भी निश्चित नियमों का निर्धारण किया गया है। इसमें भी स्वर लय और ताल का आनुषांगिक आनंद रहता है। इसमें भी बंदिशों की रचना होती है। इन कारणों से यदि नृत्य को भी शास्त्रीय संगीत में सम्मिलित कर लिया जाये तो कोई अपवाद का विषय नहीं होना चाहिए।

**तालवाद्य और शास्त्रीय संगीतः**

यही समस्या ताल वाद्यों के स्वतंत्र वादन के साथ आती है। स्वतंत्र तबला वादन, पखावज वादन अथवा मृदंगम् वादन किस प्रकार शास्त्रीय संगीत के अंतर्गत सम्मिलित किये जायें? यह प्रश्न भी विचारणीय है। ताल वाद्यों में स्वर और लय तो है, लेकिन राग नहीं होता। न ही इनमें राग–लक्षणों का प्रदर्शन किया जा सकता है। फिर किस दृष्टि से इन्हें शास्त्रीय संगीत के अंतर्गत रखा जा सकता है? वास्तव में अब तक इस विषय पर संगीत–शास्त्रियों का ध्यान ही नहीं गया। अनेक ऐसे भी विद्वान हैं जिन का ऐसा मानना है कि जो वाद्य शास्त्रीय संगीत के साथ बजाये जाते हैं – इनमें तबला आदि भी सम्मिलित हैं – उन्हें शास्त्रीय संगीत के अंतर्गत रखने में कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिये। इसी दृष्टि से तालवाद्यों को भी शास्त्रीय संगीत के अंतर्गत रखा जाता है। लेकिन इसके लिए हमें और अधिक पुष्ट प्रमाणों और तर्कों की आवश्यकता होगी। कुछ लोग ऐसा मानते हैं कि संगीत एक कला है और इसमें तर्क की कोई गुंजाइश नहीं होती। लेकिन शास्त्र के साथ बिना तर्क के नहीं चल सकते। शास्त्र का निरूपण तर्कपूर्ण नियमों के आधार से ही किया जाता है। बिना नियमों के शास्त्रीय संगीत की कल्पना की ही नहीं जा सकती। इस लिए ताल वाद्यों को शास्त्रीय संगीत में सम्मिलित किया जाये या नहीं, यह हम संगीत के विद्वानों पर ही छोड़ते हैं।

**निष्कर्षः**

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि शास्त्रीय संगीत का क्षेत्र अत्यंत व्यापक एवं विस्तृत है। इसमें गीत, वाद्य और नृत्य तीनों विधाओं का समावेश किया जाता है। राग पर आधारित, राग–लक्षणों से युक्त तथा विभिन्न प्रकार की बंदिशों से सज कर शास्त्रीय संगीत मनोहारी एवं आनंद प्रदान करने वाला अमृत बन जाता है। आजकल शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में अनेकों नवीन प्रयोग किये जा रहे हैं। हिंदुस्तानी–कर्नाटक संगीत का मिश्रण, भारतीय एवं पाश्चात्य संगीत का मिश्रण,

वाद्यवृंद संबंधी प्रयोग इत्यादि हो रहे हैं। संगीत के विविध रूपों के मिश्रण से शास्त्रीय संगीत का फ़्यूज़न हो रहा है। वाद्यवृंद रचनाओं के अंतर्गत विभिन्न वादक एक साथ एक ही ताल–लय के अंतर्गत एक ही बंदिश के विविध रूपों का अनुगमन करते हैं। यह प्रयोग बहुत आकर्षक प्रतीत होता है। संगीत में जुगलबंदी भी हो रही है।[10] पंडित शिवकुमार शर्मा, पंडित हरिप्रसाद चौरसिया[11] तथा पंडित ब्रजभूषण काबरा के अनेक ऐसे एल्बम हैं जिनमें इन महान कलाकारों ने एक साथ अपनी कला का प्रदर्शन किया है। इन प्रयोगों को देखते हुए यह माना जा सकता है कि शास्त्रीय संगीत में आज अनेकों नवीन सम्भावनाओं का सृजन हो रहा है। शास्त्रीय संगीत नवीन ऊंचाइयों को छू रहा है और इसमें अनेक नये आयाम भी जुड़ रहे हैं।

यहां यह विषय विचारणीय हो जाता है कि क्या वाद्यवृंद रचनाओं को शास्त्रीय संगीत के अंतर्गत मानना चाहिये? आनंद शंकर ने सबसे पहले भारतीय शास्त्रीय संगीत पर आधारित वाद्यों को साथ लेकर कुछ बंदिशों का सृजन किया। ये बंदिशें आज भी यूट्यूब पर उपलब्ध हैं। इन बंदिशों के कुछ उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं। इन्हें सुनें और स्वयं निर्णय लें कि क्या इन बंदिशों को शास्त्रीय संगीत में सम्मिलित करना चाहिये अथवा नहीं। नीचे दो उदाहरण दिये जा रहे हैंः –

**उदाहरण एकः यूट्यूब लिंक देखें**

https://www.youtube.com/watch?v=0676HKj2b5w

**उदाहरण दोः यूट्यूब लिंक देखें**

https://www.youtube.com/watch?v=2F8Be_k7moE

उपर्युक्त उदाहरणों से यह स्पष्ट हो जाता है कि शास्त्रीय संगीत के ये नये आयाम हैं। आजकल ऐसे अनेक प्रयोग हो रहे हैं। पं. रविशंकर ने बीटल्स म्यूज़िक बैंड के साथ मिलकर ऐसे नये प्रयोग काफी पहले ही आरंभ कर दिये थे। आधुनिक समय में पं. विश्वमोहन भट्ट, पं. शिवकुमार शर्मा, पं. हरिप्रसाद चौरसिया इत्यादि कलाकार ऐसे प्रयोग कर रहे हैं। धीरे–धीरे ऐसे प्रयोगों का अध्ययन संगीत शास्त्र की दृष्टि से भी होने लगेगा। ऐसी संभावना है। अब तक संगीत से संबंधित प्रसिद्ध पुस्तकों में इन प्रयोगों की चर्चा नहीं हुई है। लेकिन हर नवीन प्रयोग पहले क्रियात्मक परीक्षण से गुजरता है और बाद में शास्त्रीय आधार पर उसका विवेचन किया जाता है। विवेचन के बाद ही इन्हें संगीत के शास्त्रीय रूप की संज्ञा दी जा सकती है। कुल मिला कर हमारा शास्त्रीय संगीत नवीन संभावनाओं से भरा हुआ है।

**संदर्भ सूचीः –**


1. योऽयम् ध्वनिर्विशेषस्तु स्वर–वर्ण–विभूषितः। रंजको जन–चित्तानाम् स रागो कथितो बुधैः। यह श्लोक संगीतरत्नाकर के राग–विवेकाध्याय में वृहद्देशी नामक ग्रंथ से ही उद्धृत किया गया है।
2. Classical music and its implications, Carol Babiracki, p. 70.
3. This song is available at: https://www.youtube.com/watch?v=cFP6srDuHJY
4. Listen to the song at: https://www.youtube.com/watch?v=pkFrEKd4d-0
5. Listen to the song on the following link: https://www.youtube.com/watch?v=uXGMxTTB_Dg
6. This Bhajan is from the Album, “Bhakti-Kiran” and can be listened at: https://www.youtube.com/watch?v=tujcCI6MLD0
7. This Bhajan is available at the link:

https://www.youtube.com/watch?v=EqlYN2hHYtY

8. https://www.youtube.com/watch?v=6CAFRYsNXXM

9. "गीतम् वाद्यम् तथा नृत्यम्, त्रयम् संगीतमुच्यते। – संगीत रत्नाकर पिंडोत्पत्ति प्रकरण।

10. https://www.youtube.com/watch?v=sXzAKBVGelA

11. https://www.youtube.com/watch?v=EYUcd6bdAmE